रोसा धास का उपयोग भूमि पर इसके बीज बोधक आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। बीज के अंकुरण के पश्चात केवल अधिक निदारण का आवश्यकता रहती है। बीज जून/ जुलाई के माह में बोधक जाते हैं और अगस्त-सन्तान में इसे काट कर इससे तेल प्राप्त किया जा सकता है।

तेल प्राप्त करने के लिए स्थानीय तौर पर भी कृषक अपनी योजना बना सकते हैं जो अत्यंत सरल तथा कम खर्च का होता है। इसमें बोध के फलों की लाइन के अंकुरण के बाद उनका सेतू बनाया जाता है। इसके फलों के इंसानों के ऊपर नीचे बांटा जाता है। इस इंसान के ऊपर बांटा जाता है, जिसके बाद उनका सेतू बनाया जाता है। इसके बाद फलों के इंसानों के ऊपर नीचे बांटा जाता है। इसके बाद फलों के इंसानों के ऊपर नीचे बांटा जाता है। इसके बाद फलों के इंसानों के ऊपर नीचे बांटा जाता है।

इस प्रकार कृषक अपनी योजना अंकुरण भूमि पर रोसा धास का उपयोग कर न केवल अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं वरन् विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में भी सहायक हो सकते हैं।
पामरोसा या मोतिया तेल का मुख्य उपयोग द्वारा उद्योग में किया जाता है। इसको गुलाब के इलाज में मिलता जाता है। गुलाब की पंखड़ियों पर इनकालने के पहले पामरोसा तेल छिड़का जाता है। इससे अधिक इलाज का मात्रा प्राप्त होती है। विदेशों में पामरोसा तेल को आधार बनाकर कई सुगंधित पदार्थ बनाये जाते हैं जो सौंदर्य प्रसाधन के रूप में उपयोग किये जाते हैं।

इसे चन्द्रन के तेल में मिलाकर शरीर पर लगाने से मच्छर दूर रहते हैं। औषधि के रूप में कम मात्रा में लेने पर यह पेट के कई विकारों को ठीक करने में सहायक हो सकते हैं।

कुछ बच्चों पहले अंदाज में पामरोसा तेल के उपयोग पर ज्ञानवृत्त का एकाधिकार था। 40 बच्चों पूर्व जाना में रोसा तेल (मोतिया) के बीज ले जाकर इनका रोपण किया गया और वर्तमान स्थिति में जाना